संकोच का अँधेरा



लेखन
श्रीश कुमार तिवारी

चित्रांकन
हरिकृष्ण (एलियास) मनोज

21245 – संकोच का अँधेरा

ISBN 978-93-5729-499-7

प्रथम संस्करण

नवंबर 2025 कार्तिक 1947

PD 3T M

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2025

₹ 30.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा स्टालियन ग्राफ़िक्स प्रा.लि., डी–165, सेक्टर–63, नोएडा, गौतम बुद्ध नगर, उ.प्र. द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे,
बनाशंकरी III इस्टेज, **बेंगलुरु 560 085** फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन,
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट धनकल बस स्टॉप पिनहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 फ़ोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	एम. वी. श्रीनिवासन
मुख्य संपादक	:	बिज्ञान सुतार
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	अमिताभ कुमार
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी)	:	दीपक जैसवाल
सहायक संपादक	:	मीनाक्षी
उत्पादन सहायक	:	अश्वनी माचरा

लेआउट

मो. नाज़िम

कहानियाँ कहती हैं...!

कहानियाँ जीवन से जुड़े खट्टे-मीठे अनुभव, जीवन जीने का मनोबल और ऐसे विषयों के बारे में सहज रूप में जानकारी देती हैं जिन्हें जानना और समझना बहुत आवश्यक है। डिजिटल दुनिया हो या स्त्री-विमर्श, प्रकृति का संरक्षण हो या आजीविका के साधन, जीवन की चुनौतियों का सामना और समाधान हो या मतदान देने का अधिकार हो— सभी विषय ऐसे हैं जो जीवन को उत्कृष्ट रूप से जीने में सहायता करते हैं। 'महत्वपूर्ण जीवन-कौशल' के विभिन्न विषयों के इर्द-गिर्द बुनी गई सभी कहानियाँ पढ़ने का आनंद देने के साथ-साथ समझ, तर्क, विश्लेषण और उचित निर्णय आदि कुशलताओं का द्वार भी खोलती हैं। आइए, इन्हें पढ़ें, समझें और आगे बढ़ें!

कार्यक्रम समन्वयक— उषा शर्मा, *आचार्य* एवं *प्रभारी*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र-प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

मार्गदर्शन— नीना सबनानी, *एनिमेटर* एवं *सहायक संकाय*, डिजाइन विभाग, आई.आई.टी., हैदराबाद

आभार ज्ञापन

परिषद् पुस्तक के निर्माण में सहयोग करने के लिए अक्षय कुमार दीक्षित, *मेंटर*, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली; श्याम सिंह सुशील, *लेखक* तथा आई.आई.टी. हैदराबाद से प्रसाद एस. ओंकार, *विभाग प्रमुख* एवं *सह-आचार्य*, डिजाइन विभाग; दीपक जॉन मैथ्यू, *आचार्य*; डेवलिन जूड रेमेडियोज, *सहायक आचार्य*; अंकिता रॉय, *सहायक आचार्य*; मोहम्मद शाहिद, *सहायक आचार्य*; सौरव देवरी, *सहायक आचार्य*, डिजाइन विभाग; शुहिता भट्टाचार्जी, *सहायक आचार्य*, लिबरल आर्ट विभाग का आभार व्यक्त करती है।

परिषद् गौतम गोस्वामी, *सहायक आचार्य*, एनिमेशन एवं मल्टीमीडिया विभाग, बी.आई.टी., जयपुर; विभूति पंड्या, *विभाग प्रमुख* एवं *सहायक आचार्य*, एनिमेशन एवं मल्टीमीडिया विभाग, बी.आई.टी., जयपुर; मो. शाह आलम, *वरिष्ठ परामर्शदाता* (आई.सी.टी.), राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र-प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; भावना खेड़ा, *कनिष्ठ परियोजना अध्येता*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र-प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली तथा संपादकीय सहयोग के लिए प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. के मोहन शर्मा, *सहायक संपादक* (संविदा); राकेश कुमार, *सीनियर प्रूफरीडर*; अलका दिवाकर, *प्रूफरीडर* (संविदा) तथा पुस्तक को अंतिम रूप देने के लिए सुरेंद्र कुमार, *प्रभारी*, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ; मनोज कुमार, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (संविदा) का आभार ज्ञापित करती है।

उल्लास ULLAS
नव भारत साक्षरता कार्यक्रम

संकोच का अँधेरा

लेखन
श्रीश कुमार तिवारी

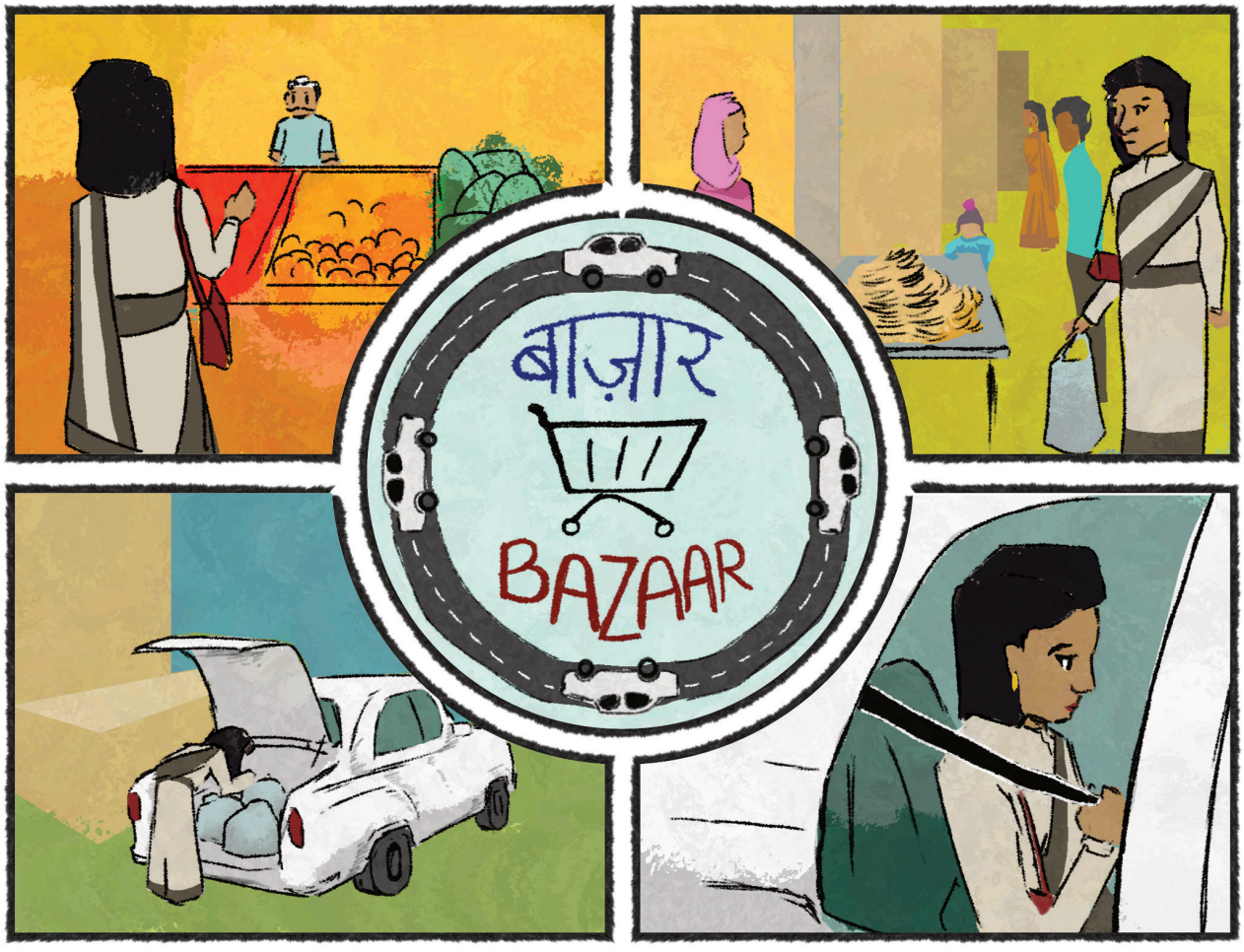
चित्रांकन
हरिकृष्ण (एलियास) मनोज

विद्यया ऽ मृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING


रितिशा समाज कल्याण विभाग में उपप्रबंधक के पद पर कार्यरत थी।
समाज कल्याण विभाग से जुड़े होने के कारण तथा अपने सरल व्यवहार के कारण उसे बहुत सम्मान और ख्याति प्राप्त थी।


चलो मोहन, बाज़ार चलना है।
जी मैडम!


बाज़ार
BAZAAR


रितिशा रास्तेभर खामोश थी।


कुछ चिंता के बादल भी दिख रहे थे।


न जाने आज वह किस सोच में डूबी थी।
मैडम, एक बहुत ज़रूरी फोन है।
आप कहें तो गाड़ी किनारे पर लगाकर बात कर लूँ?
हाँ, कर लो।


माफ़ कीजिएगा मैडम, पुलिस स्टेशन से फोन था। वरना यूँ रास्ते में गाड़ी न रोकता।
पुलिस का फोन!!
क्या हुआ? क्या कोई चिंता की बात है?
नहीं मैडम, लेकिन समय रहते ध्यान न देता तो शायद हो जाती।


क्या हुआ?
मैडम, आप तो जानती हैं कि राखी बिटिया को एस.एस.सी. की कोचिंग करवा रहा हूँ।
वहीं उसने किसी को अपना फोन नंबर दिया होगा या फिर पता नहीं कैसे?
लेकिन कुछ दिनों से उसे लगातार ब्लैंक कॉल्स आ रही थीं।

फिर... फिर क्या किया तुमने? क्या तुम्हें पता चला, कौन कॉल कर रहा था?

पता तो नहीं कर सका, पूछने पर राखी भी कुछ न बता सकी।

अच्छा! तब तुमने क्या किया?

मैंने नंबर ब्लॉक कर दिया लेकिन फिर दूसरे नंबरों से कॉल्स आने लगीं।

फिर क्या हुआ?

क्या राखी अभी भी कोचिंग जा रही है?


हाँ मैडम, बिल्कुल जा रही है। उसकी पढ़ाई क्यों रुके?
ऐसा करना इन फ़र्ज़ी कॉल्स करने वालों के हौसले बढ़ाता है।
जिन नंबरों से कॉल्स आ रही थीं, उनका पूरा विवरण देते हुए मैंने नज़दीकी पुलिस स्टेशन में जाकर रिपोर्ट दर्ज़ करवाई।


पुलिस ने आश्वासन दिया कि वह पूरी जाँच करेगी और जल्द ही ऐसा करने वालों को दंड भी देगी।


तुम्हें पुलिस स्टेशन जाते हुए डर नहीं लगा? संकोच नहीं हुआ?
डर या संकोच? किससे? पुलिस से? नहीं मैडम! वह तो हमारी सुरक्षा और सेवा के लिए है।
हमारा संकोच गलत काम करने वालों को लाइसेंस दे देता है कि वे हमें और परेशान करते रहें।

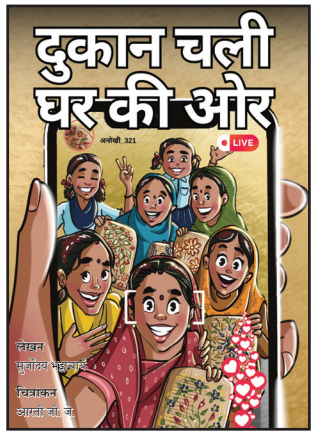

रितिशा के सवाल समाप्त हो चुके थे।
मोहन, गाड़ी सिविल लाइंस की ओर मोड़ो।
सिविल लाइंस क्यों, मैडम?
घर तो दूसरी दिशा में है।
पुलिस स्टेशन क्यों, मैडम?
सिविल लाइंस पुलिस स्टेशन जाना है।
क्या हुआ?

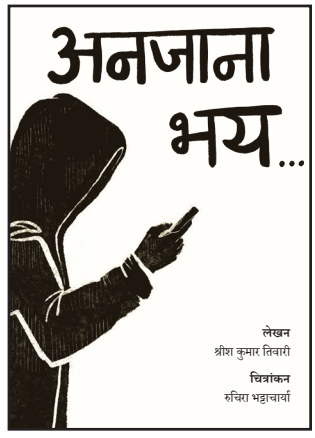

मुझे रिपोर्ट दर्ज़ करवानी है।
किस बात की, मैडम?
पिछले एक महीने से मुझे भी ब्लैंक कॉल्स आ रही हैं।
और मेरे सोशल मीडिया पर भी लगातार गलत मैसेजेस आ रहे हैं।


तुम्हारी हिम्मत ने मेरे संकोच को दूर कर दिया है।
धन्यवाद मोहन!
मैडम, आप भी!

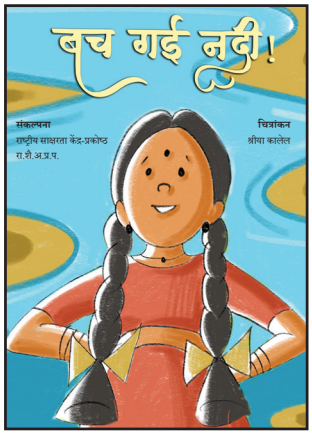
महत्वपूर्ण जीवन-कौशल पर आधारित

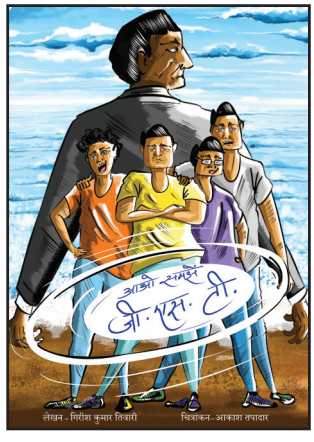
कथा शृंखला







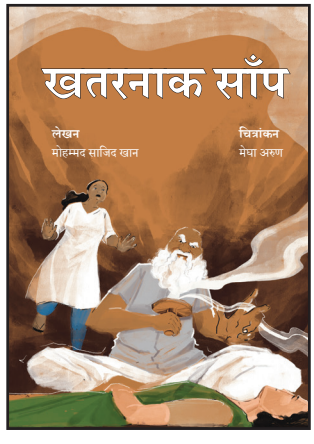






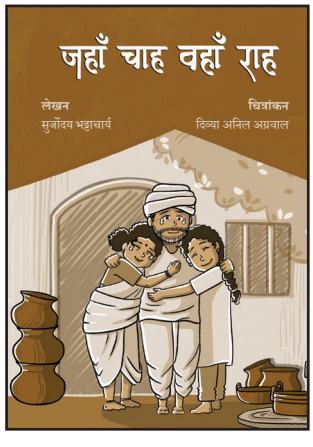


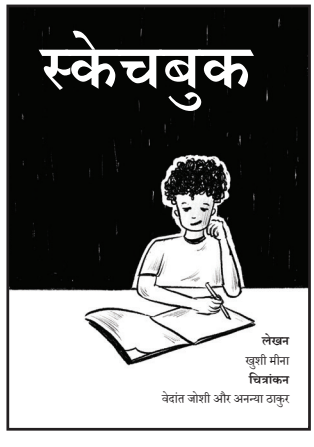












राष्ट्रीय ई-पुस्तकालय
आपका डिजिटल पुस्तकालय!
असंख्य वृत्तांत प्राप्त करने
के लिए स्कैन एवं डाउनलोड करें।



21245

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-93-5729-499-7